शंका -- इन प्रकृतियोंका सर्वसंक्रम क्यों नहीं होता?

समाधान -- नहीं, क्योंकि अन्य प्रकृतियोंमें क्षेपण करके इनका विनाश नहीं होता।

थीणगिद्धितिय-बारसकसाय-इत्थि-णवुंसयवेद-अरदि-सोग-तिरिक्खगदि-एइंदिय-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादि-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-साहारणाणं तीसण्णं पयडीणं उव्वेलणेण विणा चत्तारि संकमा होंति (थीणति-बारसकसाया संढित्थी अरइ सोगो य।। तिरियेयारं तीसे उव्वेलणहीणचत्तारि संकमणा। गो. क. ४२०-२१.) । तं जहा -- थीणगिद्धितिय-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अणंताणुबंधिचउक्क मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सासणसम्माइट्ठि त्ति अधापवत्तसंकमो, तत्थ बंधुवलंभादो। सुहुम मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदो त्ति ताव विज्झादसंकमो, तत्थ बंधाभावादो। सग-सगअपुव्वखवगपढमसमयप्पहुडि जाव चरिमट्ठिदिखंडयदुचरिमफालि त्ति ताव गुणसंकमो। चरिमफालीए सव्वसंकमो।

स्त्यानगृद्धि आदि तीन, बारह कषाय, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, अरति, शोक, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारणशरीर; इन तीस प्रकृतियोंके उद्वेलनके विना चार संक्रम होते हैं। यथा -- स्त्यानगृद्धित्रय, स्त्रीवेद, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका मिथ्यादृष्टिसे लेकर सासादनसम्यग्दृष्टि तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, क्योंकि वहाँ इनका बन्ध पाया जाता है। सम्यग्मिथ्यादृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयततक उनका विध्यातसंक्रम होता है, क्योंकि, वहाँ उनके बन्धका अभाव है। अपूर्वकरण क्षपकके प्रथम समयसे लेकर अपने अपने स्थितिकाण्डककी द्विचरम फालि तक उनका गुणसंक्रम होता है। अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है।

णउंसयवेद-एइंदिय-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-साहारणाणं मिच्छाइट्ठिम्हि अधापवत्तसंकमो, तत्थ एदासिं बंधुवलंभादो। सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदो त्ति ताव विज्झादसंकमो, अप्पसत्थत्ते संते बंधाभावादो। एइंदिय-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-आदाव-थावर-सुहुम-साहारणाणं देव-णेरइयम्मिच्छाइट्ठीसु विज्झ

ादसंकमो, तत्थ एदासिं बंधाभावादो। णवरि एइंदिय-आदाव-थावराणं ईसाणंता देवा अधापवत्तेण संकामया, तत्थ एदासिं बंधदंसणादो। अपुव्वकरणपढमसमयप्पहुडि जाव चरिमट्ठिदिखंडयदुचरिमफालि त्ति जाव एदासिं पयडीणं गुणसंकमो, अप्पसत्थत्ते तेसिं (अ-का प्रत्योः 'अप्पसत्थत्ते सिंते' इति पाठः।) बंधाभावादो। चरिमफालीये सव्वसंकमो, संछोहणेण णट्ठत्तादो।

नपुंसकवेद, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आतप, स्थावर, सूक्ष्म और साधारणशरीरका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, क्योंकि, वहाँपर इनका बन्ध पाया जाता है। सासादनसम्यग्दृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत तक उनका विध्यातसंक्रम होता है, क्योंकि, अप्रशस्तताके होनेपर वहाँ बन्धका अभाव है। एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, आतप, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण; इनका देव व नारक मिथ्यादृष्टियोंमें विध्यातसंक्रम होता है, क्योंकि, उनके इनका बन्ध नहीं होता। विशेष इतना है कि एकेन्द्रिय, आतप और स्थावर इनके ईशान कल्पतकके देव अधःप्रवृत्तसंक्रमके द्वारा संक्रामक हैं; क्योंकि उनमें इनका बन्ध देखा जाता है। अपूर्वकरणके प्रथम समयसे लेकर अन्तिम स्थितिकाण्डककी द्विचरम फालि तक इन प्रकृतियोंका गुणसंक्रम होता है, क्योंकि अप्रशस्तताके होनेपर उनके बन्धका अभाव है, इनकी अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है, क्योंकि उसका विनाश निक्षेपपूर्वक होता है।

अप्पच्चक्खाणचउक्कस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति जाव अधापवत्तसंकमो, तत्थ बंधदंसणादो। उवरि जाव अप्पमत्तसंजदचरिमसमओ ताव विज्झ ादसंकमो। उवरिमपुव्वकरणपढमसमयप्पहुडि जाव चरिमट्ठिदिखंडयदुचरिमफालि त्ति ताव गुणसंकमो। कारणं सुगमं। चरिमफालीए सव्वसंकमो, परपयडिसंछोहणेण विणट्ठत्तादो।

अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कका मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, क्योंकि वहाँ इनका बन्ध देखा जाता है। आगे अप्रमत्तसंयतके अन्तिम समयतक उनका विध्यातसंक्रम होता है। ऊपर अपूर्वकरणके प्रथम समयसे लेकर अन्तिम स्थितिकाण्डककी द्वितीय फालि तक उनका गुणसंक्रम होता है। इसका कारण सुगम है।

अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है, क्योंकि, वह अन्य प्रकृतिमें प्रक्षिप्त होकर नष्ट होती है।।

पच्चक्खाणचदुक्कस्स अप्पच्चक्खाणचदुक्कभंगो। णवरि संजदासंजदो त्ति एदेसिमधापवत्तसंकमो।

प्रत्याख्यानावरणचतुष्ककी प्ररूपणा अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कके समान है। विशेष इतना है कि संयतासंयत गुणस्थानतक इनका अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है।

अरदि-सोगाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति ताव अधापमत्तसंकमो, तत्थ एदासिं बंधुवलंभादो। अप्पमत्तसंजदम्हि (अ-का प्रत्योः 'अप्पमत्तसंजदेदि' इति पाठः।) विज्झादसंकमो, तत्थ बंधाभावादो। अपुव्वकरणपढमसमयप्पहुडि जाव अप्पणो चरिमट्ठिदिखंडयदुचरिमफालि त्ति ताव गुणसंकमो, अप्पसत्था त्ति बंधाभावादो। चरिमफालीए सव्वसंकमो। कारणं सुगमं।

अरति और शोकका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, क्योंकि, उनमें इनका बन्ध पाया जाता है। अप्रमत्तसंयतमें इनका विध्यातसंक्रम होता है, क्योंकि, वहाँ इनका बन्ध नहीं है। अपूर्वकरणके प्रथम समयसे लेकर अपने अन्तिम स्थितिकाण्डककी द्विचरम फालि तक उसका गुणसंक्रम होता है, क्योंकि, वहाँ अप्रशस्तता होनेपर उनका बन्ध नहीं है। उनकी अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है। इसका कारण सुगम है।

णिद्दा-पयला-अप्पसत्थ (अ-का प्रत्योः 'पयलाअप्पसत्थ' इति पाठः।) वण्ण-गंध-रस-फास-उवघादाणं अधापवत्तसंकमो गुणसंकमो चेदि दो चेव संकमा (अ-का प्रत्योः 'संकमो' इति पाठः। णिद्दा पयला असुहं वण्णचउक्कं च उवघादे।। सत्तण्णह गुणसंकममधापवत्तो य x x x। गो. क. ४२१-२२) । तं जहा -- णिद्दा-पयलाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणस्स पढम-सत्तमभागो त्ति जाव अधापवत्तसंकमो एत्थ

एदासिं बंधुवलंभादो।उवरि जाव सुहुमसांपराइयचरिमसमओ त्ति ताव गुणसंकमो, बंधाभावादो।

निद्रा, प्रचला तथा अप्रशस्त वर्ण गंध रस व स्पर्श और उपघातके अधःप्रवृत्तसंक्रम और गुणसंक्रम ये दो ही संक्रम होते हैं। यथा -- निद्रा और प्रचलाका मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणके प्रथम सप्तम भाग तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, क्योंकि, यहाँ इनका बन्ध पाया जाता है। आगे सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समय तक उनका गुणसंक्रम होता है, क्योंकि, यहाँ उनका बन्ध नहीं है।

अप्पसत्थवण्णचदुक्कस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणस्स छ-सत्तमभागा त्ति अधापवत्तसंकमो। उवरि जाव सुहुमसांपराइयचरिमसमओ त्ति ताव गुणसंकमो। तत्तो (अ-काप्रत्योरेतस्य स्थाने 'तत्थ' इति पाठः।) उवरि संकमो णत्थि, बंधाभावेण पडिग्गहाभावादो।

अप्रशस्त वर्णादि चारका मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणके सात भागोंमेंसे छठे भाग तक इनका अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है। आगे सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समयतक उनका गुणसंक्रम होता है। इसके आगे उनका संक्रम नहीं है, क्योंकि, बन्धके न होनेसे उनकी प्रतिग्रह प्रकृतियोंका वहाँ अभाव है।

उवघादस्स वण्णचदुक्कभंगो। एदासिं सत्तण्णं पयडीणं विज्झादसंकमो णत्थि, खवग-उवसामियसेडीसु वोच्छिण्णबंधत्तादो। उव्वेल्लणसंकमो णत्थि, अणुव्वेल्लणपयडित्तादो। सव्वसंकमो णत्थि, परपयडिसंछोहणेण अविणट्ठत्तादो।

उपघातकी प्ररूपणा वर्णचतुष्कके समान है। इन निद्रा आदि सात प्रकृतियोंका विध्यातसंक्रम नहीं होता, क्योंकि, क्षपक और उपशामक श्रेणियोंमें इनकी बन्धव्युच्छित्ति होती है। इनका उद्वेलनसंक्रम भी नहीं होता, क्योंकि, वे उद्वेलन प्रकृतियोंसे भिन्न हैं।

सर्वसंक्रम भी उनका संभव नहीं है, क्योंकि, अन्य प्रकृतियोंमें प्रक्षिप्त होकर उनका विनाश नहीं होता।

असादावेदणीय-पंचसंठाण-पंचसंघडण-अप्पसत्थविहायगइ-अपज्जत्त-अथिर-असुह-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसगित्ति-णीचागोदाणं वीसण्णं पयडीणं अधापवत्तसंकमो, विज्झादसंकमो, गुणसंकमो चेदि तिण्णिसंकमो (अ-का प्रत्योः 'तिण्णिसंकमो' इति पाठः। दुक्खमसुहगदी। संहदि-संठाणदसं णीचापुण्णथिरछक्कं च।। वीसण्हं विज्झादं अधापवत्तो गुणो य x x x । गो. क. ४२२-२३) । तं जहा -- असादावेदणीय-अथिर-असुहाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति ताव अधापमत्तसंकमो, एत्थ एदासिं बंधुवलंभादो। अप्पमत्तसंजदम्मि विज्झादसंकमो, बंधाभावादो। उवरि गुणसंकमो जाव सुहुमसांपराइयचरिमसमयो त्ति, अप्पसत्थत्तादो। उवरि संकमो णत्थि, पडिग्गहाभावादो।

असातावेदनीय, पाँच संस्थान, पाँच संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, अपर्याप्त, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति और नीचगोत्र; इन बीस प्रकृतियोंके अधःप्रवृत्तसंक्रम, विध्यातसंक्रम और गुणसंक्रम ये तीन संक्रम होते हैं। यथा -- असातावेदनीय, अस्थिर और अशुभ इनका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है; क्योंकि, यहाँ इनका बन्ध पाया जाता है। अप्रमत्तसंयतमें उनका विध्यातसंक्रम होता है, क्योंकि, वहाँ इनका बन्ध नहीं होता। आगे सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समय तक उनका गुणसंक्रम होता है, क्योंकि, वे अप्रशस्त प्रकृतियाँ हैं। इससे आगे उनका संक्रम नहीं होता, क्योंकि, प्रतिग्रह प्रकृतियोंका अभाव है।

हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं मिच्छाइट्ठिम्हि अधापवत्तसंकमो, तत्थ एदासिं बंधुवलंभादो। उवरि जाव अप्पमत्तसंजदो त्ति विज्झादसंकमो, बंधाभावादो। असंखेज्जवासाउअतिरिक्ख-मणुसमिच्छाइट्ठीसु वि विज्झादसंकमो चेव बंधाभावादो। अपुव्वकरणपढमसमयप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयचरिमसमयो त्ति ताव गुणसंकमो, बंधाभावादो। उवरि असंकमो, पडिग्गहाभावादो।

हुंडकसंस्थान और असंप्राप्तासृपाटिका संहननका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, क्योंकि, वहाँपर इनका बन्ध पाया जाता है। आगे अप्रमत्तसंयत तक इनका विध्यातसंक्रम होता है, क्योंकि, वहाँ इनका बन्ध नहीं होता। असंख्यातवर्षायुष्क तिर्यंच व मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंमें भी उनका विध्यातसंक्रम ही होता है, क्योंकि, उनके इनका बन्ध नहीं होता। अपूर्वकरणके प्रथम समयसे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समय तक उनका गुणसंक्रम होता है, क्योंकि, वहाँपर इनके बन्धका अभाव है। आगे इनका संक्रम नहीं होता, क्योंकि, प्रतिग्रह प्रकृतियोंका अभाव है।

“ादुसंठाण-चदुसंघडण-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोद-अप्पसत्थविहायगदीणं मिच्छाइट्ठि-

प्पहुडि जाव सासणसम्माइट्ठि त्ति ताव अधापवत्तसंकमो। उवरि जाव अप्पमत्तसंजदचरिमसमयो

त्ति ताव विज्झादसंकमो, बंधाभावादो। अपुव्वकरण-पढमसमयप्पहुडि जाव

सुहुमसांपराइयचरिमसमयो त्ति ताव गुणसंकमो, अप्पसत्थत्तादो।

हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं मिच्छाइट्ठिम्हि अधापवत्तसंकमो, तत्थ एदासिं बंधुवलंभादो। उवरि जाव अप्पमत्तसंजदो त्ति विज्झादसंकमो, बंधाभावादो। असंखेज्जवासाउअतिरिक्ख-मणुसमिच्छाइट्ठीसु वि विज्झादसंकमो चेव बंधाभावादो। अपुव्वकरणपढमसमयप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयचरिमसमयो त्ति ताव गुणसंकमो, बंधाभावादो। उवरि असंकमो, पडिग्गहाभावादो।

हुंडकसंस्थान और असंप्राप्तासृपाटिका संहननका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, क्योंकि, वहाँपर इनका बन्ध पाया जाता है। आगे अप्रमत्तसंयत तक इनका विध्यातसंक्रम होता है, क्योंकि, वहाँ इनका बन्ध नहीं होता। असंख्यातवर्षायुष्क तिर्यंच व मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंमें भी उनका विध्यातसंक्रम ही होता है, क्योंकि, उनके इनका बन्ध नहीं होता। अपूर्वकरणके प्रथम समयसे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समय तक

उनका गुणसंक्रम होता है, क्योंकि, वहाँपर इनके बन्धका अभाव है। आगे इनका संक्रम नहीं होता, क्योंकि, प्रतिग्रह प्रकृतियोंका अभाव है।

चदुसंठाण-चदुसंघडण-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोद-अप्पसत्थविहायगदीणं मिच्छाइट्ठि-प्पहुडि जाव सासणसम्माइट्ठि त्ति ताव अधापवत्तसंकमो। उवरि जाव अप्पमत्तसंजदचरिमसमयो त्ति ताव विज्झादसंकमो, बंधाभावादो। अपुव्वकरण-पढमसमयप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयचरिमसमयो त्ति ताव गुणसंकमो, अप्पसत्थत्तादो। उवरि असंकमो, पडिग्गहाभावादो। एवमपज्जत्तस्स वि। णवरि मिच्छाइट्ठिम्हि चेव एदस्स अधापवत्तसंकमो।

चार संस्थान, चार संहनन, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, नीचगोत्र और अप्रशस्त विहायोगति; इनका मिथ्यादृष्टिसे लेकर सासादनसम्यग्दृष्टि तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है। आगे अप्रमत्तसंयतके अन्तिम समय तक उनका विध्यातसंक्रम होता है, क्योंकि आगे उनका बन्ध नहीं होता। अपूर्वकरणके प्रथम समयसे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समय तक उनका गुणसंक्रम होता है, क्योंकि, वे अप्रशस्त प्रकृतियाँ हैं। आगे उनका संक्रम नहीं है, क्योंकि, प्रतिग्रह प्रकृतियोंका अभाव है। इसी प्रकार अपर्याप्त नामकर्मके भी विषयमें कहना चाहिये। विशेष इतना है कि इसका अधःप्रवृत्तसंक्रम केवल मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें ही होता है।

अजसकित्तीए अपज्जत्तभंगो। णवरि मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति एदिस्से अधापवत्तसंकमो, एदेसु गुणट्ठाणेसु बंधुवलंभादो।

अयशकीर्तिकी प्ररूपणा अपर्याप्तके समान है। विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयततक इसका अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें उनका बन्ध पाया जाता है।

मिच्छत्तस्स विज्झादसंकमो गुणसंकमो सव्वसंकमो चेदि तिण्णि संकमा (अ-का प्रत्योः 'तिण्णिसंकमो' इति पाठः। मिच्छत्ते। विज्झाद-गुणे सव्वं x x x ।। गो. क. ४२३.) । तं जहा -- पढमसमयप्पहुडि जाव अंतोमुहुत्तकालं उवसमसम्माइट्ठिम्हि मिच्छत्तस्स गुणसंकमो। खवणाए वि अपुव्वकरणपढमसमयप्पहुडि जाव चरिमट्ठिदिखंडयदुचरिमफालि त्ति गुणसंकमो। चरिमफालीए सव्वसंकमो। उवसमसम्माइट्ठिम्हि य मिच्छत्तस्स विज्झादसंकमो।

मिथ्यात्व प्रकृतिके विध्यातसंक्रम, गुणसंक्रम और सर्वसंक्रम ये तीन संक्रम होते हैं। यथा -- प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त काल तक उपशमसम्यग्दृष्टि जीवके मिथ्यात्वका गुणसंक्रम होता है। क्षपणामें भी अपूर्वकरणके प्रथम समयसे लेकर अन्तिम स्थितिकाण्डककी द्विचरम फालि तक उसका गुणसंक्रम होता है। अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है। उपशमसम्यग्दृष्टिके ही मिथ्यात्वका विध्यातसंक्रम भी होता है।

वेदगसम्मत्तस्स चत्तारि संकमा (अ-का प्रत्योः 'चत्तारिसंकमो' इति पाठः। सम्मे विज्झादपरिहीणा। गो. क. ४२३.) अधापवत्तसंकमो उव्वेलणसंकमो गुणसंकमो सव्वसंकमो चेदि। तं जहा -- मिच्छत्तं गदसम्माइट्ठिम्हि जाव अंतोमुहुत्तकालं ताव अधापवत्तसंकमो। तदो प्पहुडि जाव पलिदो० असंखे० भागमेत्तकालं ताव उव्वेलणसंकमो अंगुलस्स असंखे) भागपडिभागिगो। उव्वेलण (ता प्रतौ 'उव्वेलणसंकमो। अंगुलस्स असंखे० भागपडिभागिगो उव्वेलण-' इति पाठः।) चरिमखंडयपढमसमयप्पहुडि ताव गुणसंकमो जाव तस्सेव दुचरिमफालि त्ति। चरिमफालीए सव्वसंकमो।

वेदकसम्यक्त्वके अधःप्रवृत्तसंक्रम, उद्वेलनसंक्रम, गुणसंक्रम और सर्वसंक्रम ये चार संक्रम होते हैं। यथा -- सम्यक्त्वको प्राप्त हुए सम्यग्दृष्टिके सम्यक्त्वप्रकृतिका अन्तर्मुहूर्त काल तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है। उसके आगे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र काल तक अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रतिभागवाला उसका उद्वेलन संक्रम होता है। उद्वेलनके अन्तिम काण्डकके प्रथम समयसे लेकर उसको ही द्विचरम फालि तक उसका गुणसंक्रम होता है। उसकी अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है।

सम्मामिच्छत्त (अ-का प्रत्योः 'मिच्छत्त', ता प्रतौ '(सम्मा) मिच्छत्त' इति पाठः।) देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंग-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंग-उच्चागोदाणं बारसण्णं पयडीणं पंच संकमो (सम्मविहीणुव्वेल्ले पंचेव य तत्थ होंति संकमणा।। गो. क. ४२४.)। तं जहा -- मिच्छत्तं गदसम्माइट्ठिम्हि अंतोमुहुत्तकालं सम्मामिच्छत्त० अधापवत्तसंकमो। तदो उवरि पलिदो० असंखे० भागमेत्तकालं सम्मामिच्छत्तं उव्वेल्लणसंकमो। चरिमखंडए गुणसंकमो जाव तस्सेव दुचरिमफालि त्ति। चरिमफालीए सव्वसंकमो। दंसणमोहक्खवगअपुव्वकरणपढमसमयप्पहुडि ताव सम्मामिच्छत्तस्स गुणसंकमो जाव चरिमट्ठिदिखंडयस्स दुचरिमफालि त्ति। चरिमफालीए सव्वसंकमो। उवसम-वेदगसम्माइट्ठीसु विज्झादसंकमो अंगुलस्स असंखे० भागपडिभागियो।

सम्यग्मिथ्यात्व, देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, नरकगति, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आहारकशरीर, आहारकशरीरांगोपांग नामकर्म और उच्चगोत्र इन बारह प्रकृतियोंके पाँच संक्रम होते हैं। यथा -- मिथ्यात्वको प्राप्त सम्यग्दृष्टिके अन्तर्मुहूर्त काल सम्यग्मिथ्यात्वका अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है। उसके आगे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र काल तक सम्यग्मिथ्यात्वका उद्वेलनसंक्रम होता है। अन्तिम काण्डकमें उसकी ही द्विचरम फालि तक गुणसंक्रम होता है। चरम फालिका सर्वसंक्रम होता है। दर्शनमोहक्षपक अपूर्वकरणके प्रथम समयसे लेकर अंतिम स्थितिकाण्डककी द्विचरम फालि तक सम्यग्मिथ्यात्वका गुणसंक्रम होता है। उसकी अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है। उपशमसम्यग्दृष्टि और वेदकसम्यग्दृष्टिके उसका अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रतिभागवाला विध्यातसंक्रम होता है।

देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणछसत्तभागे (ता प्रतौ 'भागो' इति पाठः।) त्ति अधापवत्तसंकमो,तत्थ एदासिं बंधुवलंभादो। तत्तो उवरिं पि बंधाभावे वि अधापवत्तसंकमो चेव, पसत्थत्तादो। देव-णेरइएसु विज्झादसंकमो, बंधाभावादो। एइंदिय-विगलिंदिएसु उव्वेल्लणसंकमो जाव उव्वेल्लणचरिमखंडयमपत्तो त्ति। चरिमखंडए गुणसंकमो जाव तस्सेव दुचरिमफालि त्ति। चरिमफालीए सव्वसंकमो।

देवगति और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मिथ्यादृष्टि से लेकर अपूर्वकरणके सात भागोंमें से छठे भागतक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, क्योंकि, वहाँ इनका बन्ध पाया जाता है। उसके आगे भी बन्धका अभाव होनेपर भी अधःप्रवृत्तसंक्रम ही होता है, क्योंकि, वे अप्रशस्त प्रकृतियाँ हैं। देवों व नारकियोंमें उनका विध्यात संक्रम होता है, क्योंकि, उनके इनका बंध नहीं होता। एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवों में उद्वेलनके अन्तिम काण्डकके प्राप्त न होने तक उनका उद्वेलनसंक्रम होता है। अन्तिम काण्डकमें उसीकी द्विचरम फालि तक गुणसंक्रम होता है। अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है।

वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंगाणं देवगइभंगो। णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणं पि देवगइभंगो। णवरि मिच्छाइट्ठिम्हि चेव अधापवत्तसंकमो। सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदो त्ति विज्झादसंकमो। देव-णेरइएसु वि विज्झादसंकमो, बंधाभावादो। अपुव्वकरणप्पहुडि जाव सगचरिमट्ठिदिखंडयदुचरिमफालि त्ति गुणसंकमो। चरिमफालीए सव्वसंकमो। एइंदिय-विगलिंदिएसु उव्वेलणसंकमो। उव्वेल्लणचरिमखंडए गुणसंकमो। तस्सेव चरिमफालीए सव्वसंकमो। एवं पंच संकमा होंति।

वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरांगोपांगकी प्ररूपणा देवगति के समान है। नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी भी प्ररूपणा देवगतिके समान है। विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें ही इनका अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है। सासादनसम्यग्दृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत तक उनका विध्यातसंक्रम होता है। देवों व नारकियोंमें भी उनका विध्यातसंक्रम होता है, क्योंकि, उनके इनका बंध नहीं होता। अपूर्वकरणसे लेकर अपने अन्तिम स्थितिकाण्डककी द्विचरम फालि तक उनका गुणसंक्रम और अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है। एकेन्द्रियों और विकलेन्द्रियोंमें उनका उद्वेलनसंक्रम होता है। उद्वेलनके अन्तिम काण्डकमें (द्विचरम फालि तक) उनका गुणसंक्रम और उसीकी अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है। इस प्रकार उक्त दो प्रकृतियोंके पाँच संक्रम होते हैं।

मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति अधापवत्तसंकमो, तत्थ बंधुवलंभादो। संजदासंजदप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदो त्ति विज्झादसंकमो। असंखेज्जवासाउअतिरिक्ख-मणुस्सेसु विज्झादसंकमो, बंधाभावादो। तेउ-वाउकाइएसु उव्वेल्लणसंकमो जाव दुचरिमुव्वेल्लणकंडयो (अ-का प्रत्योः 'दुचरिममुव्वेल्लणकंडयो' इति पाठः।) त्ति। चरिमुव्वेल्लणखंडए गुणसंकमो। तस्सेव चरिमफालीए सव्वसंकमो।

मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, क्योंकि, वहाँ इनका बन्ध पाया जाता है। संयतासंयतसे लेकर अप्रमत्तसंयत तक उनका विध्यातसंक्रम होता है। असंख्यातवर्षायुष्क तिर्यंचों और मनुष्योंमें उनका विध्यातसंक्रम होता है, क्योंकि, उनमें इनका बन्ध नहीं होता। तेजकायिकों और वायुकायिकोंमें द्विचरम उद्वेलन काण्डक तक उसका उद्वेलनसंक्रम होता है। अन्तिम उद्वेलनकाण्डकमें (द्विचरम फालि तक) गुणसंक्रम और उसीकी अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है।

आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंगाणं अप्पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अपुव्वकरणो त्ति ताव अधापवत्तसंकमो, तत्थ बंधुवलंभादो। हेट्ठिमगुणट्ठाणेसु विज्झादसंकमो, बंधाभावादो। असंजमं गदो आहारसरीरसंतकम्मियो संजदो अंतोमुहुत्तेण उव्वेल्लणमाढवेदि जाव असंजदो जाव असंतकम्मं च अत्थि ताव उव्वेल्लेदि।

आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोपांग नामकर्मोंका अप्रमत्तसंयतसे लेकर अपूर्वकरण तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, क्योंकि, वहाँ इनका बन्ध पाया जाता है। अधस्तन गुणस्थानोंमें उनका विध्यातसंक्रम होता है, क्योंकि, वहाँ इनका बन्ध नहीं होता। आहारशरीरसत्कर्मिक संयत असंयमको प्राप्त होकर अन्तर्मुहूर्तमें उद्वेलना प्रारंभ करता है, जब तक वह असंयत है और जब तक सत्कर्मसे रहित है तब तक वह उद्वेलना करता है।

संपहि सव्वुव्वेल्लणपयडीणमुव्वेल्लणक्कमो वुच्चदे। तं जहा -- अधापवत्तट्ठिदिखंडयं पलिदो० असंखे भागो। तासिं ट्ठिदीणं पढमसमए जमुक्कीरिज्जदि पदेसग्गं तं थोवं।

बिदियसमए जमुक्कीरिज्जदि पदेसग्गं तमसंखेज्जगुणं। तदियसमए जमुक्कीरिज्जदि पदेसग्गं तमसंखेज्जगुणं। एवमसंखेज्जगुणवड्ढीए णेयव्वं जाव अंतोमुहुत्तं त्ति। एत्थ गुणगारपमाणं पलिदो० असंखे० भागो।

अब सब उद्वेलनप्रकृतियोंकी उद्वेलनकी प्रक्रियाकी प्ररूपणा की जाती है। यथा -- अधःप्रवृत्तिस्थितिकाण्डक पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। उन स्थितियोंका जो प्रदेशाग्र प्रथम समय में उत्कीर्ण किया जाता है वह स्तोक है। द्वितीय समयमें जो प्रदेशाग्र उत्कीर्ण किया जाता है वह असंख्यातगुणा है। तृतीय समयमें जो प्रदेशाग्र उत्कीर्ण किया जाता है वह असंख्यातगुणा है। इस प्रकार अन्तर्मुहूर्त काल तक असंख्यातगुणी वृद्धिके क्रमसे ले जाना चाहिये। यहाँ गुणकारका प्रमाण पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग है।

परपयडीसु जं पदेसग्गं दिज्जदि तं थोवं। जं सत्थाणे दिज्जदि तमसंखेज्जगुणं। जं सत्थाणे तं गुणसेडीए दिज्जदि, जं परत्थाणे तं पदेसग्गं विसेसहाणीए दिज्जदि। एस विही पढमस्स ट्ठिदिखंडयस्स। जो विही पढमस्स ट्ठिदिखंडयस्स परूविदो सो चेव विही बिदियखंडयप्पहुडि जाव दुचरिमखंडओ त्ति ताव सव्वखंडयाणं परूवेयव्वो। चरिमट्ठिदिखंडयपमाणं पलिदो० असंखे० भागो। तस्स पदेसग्गं सव्वं (अ-का प्रत्योः 'सद्दं', ता प्रतौ 'सद्दं (व्वं)' इति पाठः।) परत्थाणे चेव दिज्जदि असंखेज्जगुणाए सेढीए। पढमट्ठिदिखंडयस्स ट्ठिदीओ बहुगाओ। बिदियस्स विसेसहीणाओ। तदियस्स ट्ठिदिखंडयस्स ट्ठिदीओ विसेसहीणाओ। एवमणंतरोवणिधाए णेयव्वं जाव दुचरिमट्ठिदिखंडओ त्ति। दुचरिमट्ठिदिखंडयट्ठिदीहिंतो। चरिमट्ठिदिखंडयस्स (प्रतिषु 'चट्ठिदिखंडयस्स' इति पाठः।) ट्ठिदीओ असंखे० गुणाओ।

अन्य प्रकृतियोंमें जो प्रदेशाग्र दिया जाता है वह स्तोक है। स्वस्थानमें जो प्रदेशाग्र दिया जाता है वह असंख्यातगुणा है। जो प्रदेशाग्र स्वस्थानमें दिया जाता है वह गुणश्रेणिक्रमसे दिया जाता है और जो प्रदेशाग्र परस्थानमें दिया जाता है वह विशेषहानिके क्रमसे दिया जाता है। यह विधि प्रथमकाण्डककी है। जो विधि प्रथम स्थितिकाण्डककी कही गयी है वही विधि द्वितीय काण्डकसे लेकर द्विचरम काण्डक तक सब काण्डकोंकी कहना चाहिये।

अन्तिम स्थितिकाण्डकका प्रमाण पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग है। उसका सब प्रदेशाग्र असंख्यात गुणित श्रेणिसे परस्थानमें ही दिया जाता है। प्रथम स्थितिकाण्डककी स्थितियाँ बहुत हैं। द्वितीय स्थितिकाण्डककी स्थितियाँ विशेष हीन हैं। तृतीय स्थितिकाण्डककी स्थितियाँ विशेष हीन हैं। इस प्रकार अनन्तरोपनिधासे द्विचरम स्थितिकाण्डक तक ले जाना चाहिये। द्विचरम स्थितिकाण्डककी स्थितियोंसे चरम स्थितिकाण्डककी स्थितियाँ असंख्यातगुणी हैं।

परंपरोवणिधाए पढमट्ठिदिखंडयमुवणिहाय अत्थि काणिचि(ता प्रतौ 'खंडयमुवणिहा य अत्थि। काणिचि' इति पाठः।)ट्ठिदिखंडयाणि संखेज्जगुणहीणाणि काणिचि असंखे गुणहीणाणि। तत्थ जं दुचरिमट्ठिदिखंडयमाहारदुगस्स तस्स जं चरिमसमए संकमदि पदेसग्गं परत्थाणे सो जहण्णओ उव्वेल्लणसंकमो। तेण संकममाणेण तिस्से पयडीए ताधे जं सेसयं कम्मं तं पलिदोवमस्स असंखे० भागेण अवहरिज्जदि। सव्वकम्मं पुण अंगुलस्स असंखे० भागेण अवहरिज्जदि।

परम्परोपनिधाकी अपेक्षा प्रथम स्थितिकाण्डक उपनिधामें कितने ही स्थितिकाण्डक संख्यातगुणे हीन हैं और कितने ही असंख्यातगुणे हीन हैं। उनमें जो आहारद्विकका द्विचरम स्थितिकाण्डक है उनका जो प्रदेशाग्र अन्तिम समयमें परस्थानमें संक्रान्त होता है वह जघन्य उद्वेलनासंक्रम है। उसके द्वारा संक्रान्त होता हुआ उक्त प्रकृतिका जो उस समय शेष कर्म है वह पल्योपमके असंख्यातवें भागसे अपहृत होता है। परन्तु सब कर्म अंगुलके असंख्यातवें भागसे अपहृत होता है।

संपहि पयदं परूवेमो -- आहारदुगस्स उव्वेल्लणकालब्भंतरे उव्वेल्लणसंकमो। चरिमट्ठिदिखंडए गुणसंकमो। तत्थेव चरिमफालीए सव्वसंकमो।

अब प्रकृतिकी प्ररूपणा करते हैं -- आहारद्विकका उद्वेलनाके भीतर उद्वेलनासंक्रम होता है। अन्तिम स्थितिकाण्डकमें गुणसंक्रम होता है। उसमें ही अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है।

उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सासणसम्माइट्ठि त्ति अधापवत्तसंकमो। उवरि असंकमो, पडिग्गहाभावादो। सत्तमपुढविणेरइएसु विज्झादसंकमो। तेउ-वाउकाइएसु उव्वेल्लणसंकमो, तत्थ उव्वेल्लणपाओग्गपरिणामाणमुवलंभादो। चरिमुव्वेल्लणखंडए गुणसंकमो। तस्सेव चरिमफालीए सव्वसंकमो।

उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टिसे लेकर सासादन सम्यग्दृष्टि तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है। आगे उसका संक्रम नहीं होता है, क्योंकि, प्रतिग्रह प्रकृतिका अभाव है। सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें उसका विध्यातसंक्रम होता है। तेजकायिक और वायुकायिक जीवोंमें उसका उद्वेलनसंक्रम होता है, क्योंकि, वहाँ उद्वेलनके योग्य परिणाम पाये जाते हैं। अन्तिम उद्वेलन काण्डकमें गुणसंक्रम होता है। उसीकी अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है।

तिण्णिसंजलण-पुरिसवेदाणमधापवत्तसंकमो चेदि दोण्णि संकमा (अ-का प्रत्योः 'दोण्णिसंकमो' इति पाठः।) होंति। तं जहा -- तिण्णं संजलणाणं पुरिसवेदस्स च मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति अधापवत्तसंकमो। चरिमखंडयचरिमफालीए एदासिं सव्वसंकमो।

तीन संज्वलन और पुरुषवेदके अधःप्रवृत्तसंक्रमऔर सर्वसंक्रम ये दो संक्रम होते हैं। यथा -- तीन संज्वलन कषायों और पुरुषवेदका मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है। इनके अन्तिम काण्डककी अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है।

हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं गुणसंकमो सव्वसंकमो चेदि तिण्णि संकमा होंति। तं जहा -- मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणचरिमसमयो त्ति एदासिमधापवत्तसंकमो। उवरि गुणसंकमो जाव चरिमट्ठिदिखंडयदुचरिमफालि त्ति। चरिमफालीए सव्वसंकमो।

हास्य, रति, भय और जुगुप्साके अधःप्रवृत्तसंक्रम, गुणसंक्रम और सर्वसंक्रम ये तीन संक्रम होते हैं। यथा -- मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणके अन्तिम समय तक इनका अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है। आगे अन्तिम स्थितिकाण्डककी द्विचरम फालि तक गुणसंक्रम होता है। अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है।

ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-वज्जरिसह-तित्थयराणमधापवत्तसंकमो विज्झादसंकमो चेदि दोण्णि संकमा। तं जहा -- ओरालियदुग-पढमसंघडणाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति अधापवत्तसंकमो, तत्थ बंधदंसणादो। असंखेज्जवासाउअतिरिक्ख-मणुस्सेसु विज्झादसंकमो तत्थ एदासिं बंधाभावादो। तित्थयरस्स असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणो त्ति ताव अधापवत्तसंकमो। मिच्छाइट्ठिम्हि विज्झ ादसंकमो, तत्थ बंधाभावादो (ता प्रतौ 'तत्थ बंधाभावादो' इत्येतावानयं पाठो नास्ति।)।

औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभनाराचसंहनन और तीर्थंकर प्रकृतिके अधःप्रवृत्तसंक्रम और विध्यातसंक्रम ये दो संक्रम होते हैं। यथा -- औदारिकद्विक और प्रथम संहननका मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, क्योंकि, वहाँ पर उनका बंध देखा जाता है। असंख्यातवर्षायुष्क तिर्यंचों और मनुष्योंमें इनका विध्यातसंक्रम होता है, क्योंकि, उनमें इनका बन्ध नहीं होता। तीर्थंकर प्रकृतिका असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अपूर्वकरण तक अधःप्रवृत्तकरणसंक्रम होता है। मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में उसका विध्यातसंक्रम होता है, क्योंकि वहाँ उसका बन्ध नहीं होता।

गुणसंकमेण संकममाणस्स अवहारकालो थोवो। अधापवत्तसंकमेण संकामयंतस्स अवहारकालो असंखेज्जगुणो। विज्झादसंकमेण संकामयंतस्स अवहारकालो असंखे० गुणो। एदमप्पाबहुअं उक्कस्सपदेससंकमभागहाराणं, ण सव्वेसिं; विज्झादसंकमभागहारादो

अधापवत्तभागहारस्स विसेसहीणत्तुवलंभादो। एदं कुदो णव्वदे? पच्चक्खाणलोभ-जहण्णसंकमदव्वादो केवलणाणावरणजहण्णसंकमदव्वं विसेसाहियं ति उवरिमअप्पाबहुगादो। उव्वेल्लणसंकमेण संकामयंतस्स अवहारकालो असंखे० गुणो। एदमप्पाबहुअं एत्थ अवहारेयव्वं। एवं परूवणा समत्ता।

गुणसंक्रमके द्वारा संक्रान्त होनेवाले प्रदेशाग्रका अवहारकाल स्तोक है। अधःप्रवृत्तसंक्रमके द्वारा संक्रान्त होनेवाले प्रदेशाग्रका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। विध्यातसंक्रमके द्वारा संक्रान्त होनेवाले प्रदेशाग्रका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। यह अल्पबहुत्व उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमभागहारोंका है, न कि सब भागहारोंका; क्योंकि, विध्यातसंक्रमभागहारसे अधःप्रवृत्तसंक्रमभागहार विशेष हीन पाया जाता है।

शंका -- यह कहाँसे जाना जाता है?

समाधान -- वह प्रत्याख्यानावरण लोभके जघन्य संक्रमद्रव्यसे केवलज्ञानावरणका जघन्य संक्रमद्रव्य विशेष अधिक है, इस आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्वसे जाना जाता है।

उसकी अपेक्षा उद्वेलनसंक्रमसे संक्रान्त होनेवाले द्रव्यका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। इस अल्पबहुत्वका यहाँ अवधारण करना चाहिये। इस प्रकार प्ररूपणा समाप्त हुई।

एत्तो सामित्तं। तं जहा -- मदिआवरणस्स उक्कस्सओ (अ प्रतौ 'आवरणउक्कस्सओ' इति पाठः।) पदेससंकमो कस्स? जो गुणिदकम्मंसिओ सत्तमादो पुढवीदो मदो तिरिक्खो जादो तस्स आवलियतब्भवत्थस्स उक्कस्सगो मदिआवरणस्स पदेससंकमो। चदुणाणावरण-चदुदंसणावरण पंचंतराइयाणं मदिणाणावरणभंगो (तत्तो उव्वट्टित्ता आवलिगासमयतब्भवत्थस्स। आवरण-विग्घचोद्दसगोरालियसत्त उक्कोसो।। क. प्र. २-७९.)। णिद्दा-पयलाणं उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स? गुणिदकम्मंसियस्स चरिमसमयसुहुमसांपराइयस्स खवगस्स। थीणगिद्धितियस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स? गुणिदकम्मंसियस्स अणिइट्टिखवयस्स सव्वसंकमेण थीणगिद्धितियचरिमफालिं संकामेंतस्स (अ प्रतौ 'चरिमफाली संकमेंतस्स', का प्रतौ 'चरिमफालिसंकमो तस्स', ता प्रतौ 'चरिमफालि (लिं) संकामेंतस्स' इति पाठः। कम्मचउक्के असुभाण बज्झमाणीण सुहुम खवग रागंते। संछोमणम्मि नियगे चउवीसाए नियट्टिस्स।। क. प्र. २-८०. कर्मचतुष्के दर्शनावरण-वेदनीय-नाम-गोत्रलक्षणे या अशुभाः सूक्ष्मसाम्परायावस्थायामबध्यमानाः प्रकृतयो

निद्राद्विकासातावेदनीय-प्रथमवर्जसंस्थान-प्रथमवर्जसंहननाशुभवर्णादिनवकोपघाता-प्रशस्तविहायोगत्यपर्याप्तास्थिराशुभ-दुर्भग-दुःस्वरानादेयायशःकीर्ति-नीचैर्गोत्रलक्षणा द्वात्रिंशत् प्रकृतयस्तासां गुणितकर्मांशस्य क्षपकस्य सूक्ष्मसाम्परायस्यान्ते चरमसमये उत्कृष्टः प्रदेशसंक्रमो भवति। तथाऽनिवृत्तिबादरस्य गुणितकर्मांशस्य क्षपकस्य मध्यमकषायाष्टक-स्त्यानगृद्धित्रिक-तिर्यग्द्विक-द्वि-त्रि-चतुरिन्द्रियजाति-सूक्ष्म-साधारणनोकषायषट्करूपाणां चतुर्विंशतिप्रकृतीनां (२४) आत्मीय आत्मीये चरमसंछोभे चरमसंक्रमे उत्कृष्टप्रदेशसंक्रमो भवति। मलय.)। सादस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स? जो गुणिदकम्मंसियो सत्तमादो पुढवीदो मदो तिरिक्खओ जादो, ताधे चेव सादं पबद्धं, तप्पाओग्गउक्कस्सियाए सादबंधगद्धाए गदो, पुणो असादं पबद्धं, तस्स आवलियादिक्कंतस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो (तत्तो अणंतरागयसमयादुक्कस्स सायबंधद्धं। बंधिय असादबंधालिगंतसमयम्मि सायस्स।। क. प्र. २-८१. ततो नरकभवादनन्तरभवे समागतः ....। मलय.)। असादस्स णिद्दाभंगो।

यहाँ स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है -- मतिज्ञानावरणका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है? जो गुणितकर्मांशिक सातवीं पृथिवीसे मरकर तिर्यंच हुआ है उसके आवली कालवर्ती तद्‌भवस्थ होनेपर मतिज्ञानावरणका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है। शेष चार ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पाँच अन्तराय प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमके स्वामित्वकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। निद्रा और प्रचलाका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है? जो गुणितकर्मांशिक चरम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके होता है। स्त्यानगृद्धित्रयका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है? वह सर्वसंक्रम द्वारा स्त्यानगृद्धित्रयकी अन्तिम फालिको संक्रान्त करनेवाले गुणितकर्मांशिक अनिवृत्तिकरण क्षपकके होता है। सातावेदनीयका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है? जो गुणितकर्मांशिक सातवीं पृथिवीसे मरकर तिर्यंच हुआ है, जिसने उसी समयमें सातावेदनीयका बन्ध किया है, तथा जिसने तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट साताबन्धकालको बिताकर फिर असातावेदनीयका बन्ध किया है, उसके बन्धावलीके बीतनेपर उसका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है। असातावेदनीयके प्रकृत स्वामित्वकी प्ररूपणा निद्राके समान है।

मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणं उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स? गुणिदकम्मंसियस्स सव्वलहुं दंसणमोहणीयं खवेंतस्स अणियट्टिकरणे सव्वसंकमेण मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणं चरिमफालीयो

संकामेंतस्स (मिच्छत्तस्स उक्कस्सपदेससंकमो कस्स? गुणिदकम्मंसिओ सत्तमादो पुढवीदो उव्वट्टिदो दो तिण्णि भवग्गहणाणि पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तएसु उववण्णो अंतोमुहुत्तेण मणुस्सेसु आगदो। सव्वलहुं दंसणमोहणीयं खवेदुमाढत्तो, जाधे मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्ते संछुभमाणं संछुद्धं ताधे तस्स मिच्छत्तस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो। क. पा. सु. पृ. ४०१, १९-२३. सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सो पदेससंकमो कस्स? जेण मिच्छत्तस्स उक्कस्सपदेसग्गं सम्मामिच्छत्ते पक्खित्तं, तेणेव जाधे सम्मामिच्छत्तं सम्मत्ते संपक्खित्तं ताधे तस्स सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो। पृ. ४०२, २७-२८. संछोभणाए दोण्हं मोहाणं वेयगस्स खणसेसे। उप्पाइय सम्मत्तं मिच्छत्तगए तमतमाए।। क. प्र. २-८२. क्षपकस्य द्वयोर्मोहनीययोर्मिथ्यात्वरूपयोरात्मीयात्मीयचरमसंछोभे सर्वसंक्रमेणोत्कृष्टः प्रदेशसंक्रमो भवति।)। सम्मत्तस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स? जो सत्तमाए पुढवीए णेरइओ गुणिदकम्मंसियो अंतोमुहुत्तसेसे सम्मत्तं पडिवण्णो, उक्कस्सेण गुणसंकमकालेण सम्मत्तमावूरिय मिच्छत्तं गदो, तस्स पढमसमयमिच्छाइट्ठिस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो (सम्मत्तस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स? गुणिदकम्मंसिएण सत्तमाए पुढवीए णेरइएण मिच्छत्तस्स उक्कस्सपदेससंतकम्ममंतोमुहुत्तेण होहिदि त्ति सम्मत्तमुप्पाइदं, सव्वुक्कस्सियाए पूरणाए सम्मत्तं पूरिदं। तदो उवसंतद्धाए पुण्णाए मिच्छत्तमुदीरयमाणस्स पढमसमयमिच्छाइट्ठिस्स तस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो। सो पुण अधापवत्तसंकमो। क. पा. सु. पृ. ४०२, २४-२६. x x x वेयगस्स खणसेसे। उप्पाइय सम्मत्तं मिच्छत्तगए तमतमाए।। क. प्र. २, ८२. तथा क्षणशेषेऽन्तर्मुहूर्तावशेषे आयुषि तमस्तमाभिधानायां सप्तमपृथिव्यां वर्तमानं औपशमिक सम्यक्त्वमुत्पाद्य दीर्घेण च गुणसंक्रमकालेन वेदकसम्यक्त्वपुञ्जं समापूर्य सम्यक्त्वात्प्रतिपातितो मिथ्यात्वं च प्रतिपद्य तत्प्रथमसमय एव वेदकसम्यक्त्वस्य मिथ्यात्वे उत्कृष्टं प्रदेशसम्यक्त्वं करोति। मलय.)।

मिथ्यात्व और सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है? वह सर्वलघुकालमें दर्शनमोहकी क्षपणा करते हुए अनिवृत्तिकरणमें सर्वसंक्रम द्वारा मिथ्यात्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी अन्तिम फालियोंको संक्रान्त करनेवाले गुणितकर्मांशिकके होता है। सम्यक्त्वप्रकृतिका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है? जो सातवीं पृथिवीका नारकी गुणितकर्मांशिक आयुमें अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर सम्यक्त्वको प्राप्त हो उत्कृष्ट गुणसंक्रमकालमें सम्यक्त्वको पूर्ण करके मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है उस प्रथम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके सम्यक्त्व प्रकृतिका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है।

अणंताणुबंधीणं उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स? सत्तमपुढविणेरइयस्स गुणिदकम्मंसियस्स सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमेत्तमाउअं अत्थि त्ति

अणंताणुबंधिचउक्कविसंजोजणमाढविय सव्वसंकमेण अणंताणुबंधिचउक्कचरिमफालिं संकामेंतस्स (क. पा. सु. पृ. ४०३, २९-३०. भिन्नमुत्ते सेसे तच्चरमावस्सगाणि किच्चेत्थ। संयोजणा विसंजोयगस्स संछोभणा एसिं।। क. प्र. २-८३.)। अट्ठकसायाणमुक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स? गुणिदकम्मंसियस्स सव्वलहुं खवणाए अब्भुट्ठियस्स अणियट्टि खवगस्स अट्ठकसायचरिमफालीए सव्वसंकमेण संकामेंतस्स (अट्ठण्हं कसायाणमुक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स? गुणिदकम्मंसिओ सव्वलहुं मणुसगइमागदो अट्ठवस्सिओ खवणाए अब्भुट्ठिदो। तदो अट्ठण्हं कसायाणमपच्छिमट्ठिदिखंडयं चरिमसमयछुहमाणयस्स तस्स अट्ठण्हं कसायाणमुक्कस्सओ पदेससंकमो।। क. पा. सु. पृ. ४०३, ३१-३२.)।

अनन्तानुबन्धी कषायोंका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है? जो सातवीं पृथिवीमें स्थित गुणितकर्मांशिक नारकी जीव सर्वजघन्य अन्तर्मुहूर्त मात्र आयुके शेष रहनेपर अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी विसंयोजनाको प्रारम्भ करके सर्वसंक्रमण द्‌वारा अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी अन्तिम फालिको संक्रान्त कर रहा है उसके उनका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है। आठ कषायोंका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है? जो गुणितकर्मांशिक अनिवृत्तिकरण क्षपक सर्वलघु कालमें क्षपणामें उद्यत होकर आठ कषायोंकी अन्तिम फालिको सर्वसंक्रम द्वारा संक्रान्त कर रहा है उसके उक्त आठ कषायोंका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है।

णवुंसयवेदस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स? ईसाणे गुणिदकम्मंसियस्स (अ-का प्रत्योः 'ईसाणे गुणियस्स', ता प्रतौ 'ईसाणे गुणि (दकम्मंसि) यस्स' इति पाठः।) इत्थिवेदेण पुरिसवेदेण वा सव्वलहुं खवणाए अब्भुट्ठियस्स णवुंसयवेदचरिमफालिं सव्वसंकमेण संकामेंतस्स (णवुंसयवेदस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स? गुणिदकम्मंसिओ ईसाणादो आगदो सव्वलहुं खवेदुमाढत्तो। तदो णवुंसयवेदस्स अपच्छिमट्ठिदिखंडयं चरिमसमयसंछुहमाणयस्स तस्स णवुंसयवेदस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो। क. पा. सु. पृ. ४०४, ३८-३९. ईसाणागयपुरिसस्स इत्थियाए व अट्ठवसाए। मासपुधत्तब्भहिए नपुंसगे सव्वसंकमणे।। क. प्र. २, ८४.)। इत्थिवेदस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स? जो गुणिदकम्मंसियो असंखेज्जवासाउएसु उववण्णो, सव्वरहस्सेण कालेण पलिदो० असंखे० भाएण पूरिदइत्थिवेदो तदो मदो जहण्णियाए देवट्ठिदीए उववण्णो, तदो चुदो सव्वरहस्सेण (अ-का प्रत्योः 'तदो वुच्चदे सव्वरहस्सेण', ता प्रतौ 'तदो वुच्चदे (चुदो) सव्वरहस्सेण' इति पाठः।) कालेण खवणाए अब्भुट्ठिदो, तदो तस्स जा इत्थिवेदचरिमफाली सव्वसंकमेण पुरिसवेदे संकमदि तदो इत्थिवेदस्स उक्कस्सओ

पदेससंकमो (इत्थिवेदस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स? गुणिदकम्मंसिओ असंखेज्जवस्साउएसु इत्थिवेदं पूरेदूण तदो पूरिदकम्मंसिओ खवणाए अब्भुट्ठिदो तदो चरिमट्ठिदिखंडयं चरिमसमयसंछुहमाणयस्स तस्स इत्थिवेदस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो। क. पा. सु. पृ. ४०४, ३४-३५. इत्थीए भोगभूमिसु जीविय वासाणसंखियाणि तओ। हस्सटिई देवत्ता सव्वलहुं सव्वसंछोभे।। क. प्र. २-८५.) ।

पुरिसवेदस्स (अ-का प्रत्योः 'पुरिसवेदयस्स' इतचि पाठः।) उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स? जेण ईसाणदेवेसु णवुंसयवेदो पूरिदो, तदो संखेज्जवासाउएसु (अ-का प्रत्योः 'वासाउएसो' इति पाठः।) इत्थिवेदो पूरिदो, तदो मदो जहण्णाए देवट्ठिदीए उववण्णो, तदो मदो मणुस्सो जादो, सव्वलहुं अण्णदरेण लिंगेण खवणाए अब्भुट्ठिदो, तेण जाव सव्वसंकमेण पुरिसवेदो संकामिदो ताव तस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो (पुरिसवेदस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स? गुणिदकम्मंसिओ इत्थि-पुरिस-णवुंसयेदे पूरेदूण तदो सव्वलहुं खवणाए अब्भुट्ठिदो, पुरिसवेदस्स अपच्छिमट्ठिदिखंडयं चरिमसमयसंछुहमाणयस्स तस्स पुरिसवेदस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो। क. प्र. सु. पृ. ४०४, ३६-३७. वरिसवरित्थिं पूरिय सम्मत्तमसंखवासियं लहियं। गंता मिच्छत्तमओ जहण्णदेवट्ठिई मोच्चा।। आगंतुं लहुं पुरिसं संछुभमाणस्स पुरिसवेयस्स। क. प्र. ८६-८७. ... वर्षवरो नपुंसकवेदः। मलय.) ।

नपुंसकवेदका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है? जो गुणितकर्मांशिक देव ईशान कल्पमें (संक्लेश परिणामसे एकेन्द्रिय प्रायोग्य बन्ध करता हुआ नपुंसकवेदको बार बार बाँधकर वहाँसे च्युत हो स्त्री अथवा पुरुष उत्पन्न होता है और तत्पश्चात् मासपृथक्त्व अधिक आठ वर्षोंके बीतनेपर) स्त्री या पुरुषवेदके साथ सर्वलघु कालमें क्षपणामें उद्यत हो सर्वसंक्रम द्वारा नपुंसकवेदकी अन्तिम फालिको संक्रान्त करता है उसके नपुंसकवेदका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है। स्त्रीवेदका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है? जो गुणितकर्मांशिक असंख्यातवर्षायुष्क जीवोंमें उत्पन्न होकर सर्वलघु काल स्वरूप पल्योपमके असंख्यातवें भागमें स्त्रीवेदको पूर्ण करके मृत्युको प्राप्त होता हुआ जघन्य देवस्थिति (दस हजार वर्ष) के साथ देव उत्पन्न हुआ है, तत्पश्चात् वहाँसे च्युत होकर सर्वलघु कालमें क्षपणामें उद्यत होकर जब वह स्त्रीवेदकी अन्तिम फालिको सर्वसंक्रम द्वारा पुरुषवेदमें संक्रान्त करता है तब उसके स्त्रीवेदका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है।